साहित्य और अपभ्रंश साहित्य(पारस्परिक सम्बन्ध के विविध पक्ष/आदान प्रदान।)

<u>संस्कृतसाहित्य और विश्वसाहित्य</u>– एक दूसरे पर प्रभाव/आदान प्रदान/समानता के बिन्दु/शास्त्रीय पक्ष/आस्वाद के मानक/आस्वाद की परिभाषा/भाव की मान्यताएँ/संवेदना के रूप/आलंकारिक अवधारणाएँ /यथार्थ और कल्पना/कामदी–त्रासदी की अवधारणा/कविता का स्वरूप/काव्य के घटक तत्त्व/कविकर्म से सम्बद्ध प्रश्न और ज्ञान/कविप्रतिभा/कवित्व में निसर्ग की भूमिका प्रभृति विचारणीय बिन्दु।

<u>आधुनिकसंस्कृतसाहित्य</u>– समीक्षा/समालोचना के आधार/परिचायक तत्त्व /रचनाकारों के परिचायक तत्त्व/प्राचीन काव्य–शास्त्रपरम्परा का अनुवर्तन/नूतनोद्भावन/नएवाद/समस्याएँ/प्रवृत्तियाँ/बोध/वैश्विकता/सम–कालीनचेतना/विश्वपरिदृश्य आदि ।

<u>शुल्क एवं पंजीकरण</u> –

सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों को पंजीकरण कराना अनिवार्य होगा। यदि उनके साथ कोई सहचर है तो उसके लिए आवास और भोजन के लिए अलग से रु.८००.०० (रु.आठसौ मात्र) देय होगा। शुल्क नगद अथवा बैंक डॉफ्ट के रूप में अध्यक्ष साहित्यविभाग ,का.हि.वि.वि. के नाम से भारतीय स्टेट बैंक,बी.एच.यू. वाराणसी में देय होगा। शोधपत्र–सारांश के साथ शुल्क प्रेषित करने की अंतिम तिथि ३०–०१–२०१० है।इसके बाद भी पंजीकरण (निर्धारित शुल्क पर) होगा किन्तु शोधपत्रसारांश प्रकाशित नही किया जा सकेगा। अत: समय से पूर्व ही पंजीकरण करा लेना उचित होगा। शुल्क विवरण आगे दिया जा रहा है।

<u>पंजीकरणशुल्क</u>– रु.१०००.०० (रु.एक हजार मात्र),आवासशुल्क रु.३००.००(पंजीकरण शुल्क के अतिरिक्त,)आवासव्यवस्था केवल वाराणसी से बाहर से आए हुए प्रतिनिधियों के लिए ही की जा सकेगी। स्थानीय प्रतिनिधियों के लिए आवासशुल्क नहीं देय होगा। प्रतिनिधियों के आवास की व्यवस्था दि.०७ फरवरी के सायंकाल से लेकर दि.११फरवरी के प्रात:काल १० बजे तक ही की जा सकेगी।प्रतिनिधियों से अनुरोध है कि वे अपने साथ आवश्यक उनी वस्त्र ले आवें क्योंकि फरवरी के द्वितीय सप्ताह में वाराणसी में हल्के ठंड का समय होता है। भोजन की व्यवस्था दि.सात फरवरी की रात्रि से ११फरवरी के सुबह के जलपान तक की रहेगी ।

<u>शोधपत्र</u>– प्रतिनिधियों से अनुरोध हे कि वे अपना शोधपत्र पूर्णरूपेण कंप्यूटरटंकित या सुस्पष्ट रूप से लिखा हुआ ए–४ साइज पेपर पर संस्कृत/हिन्दी/अंग्रेजी में प्रस्तुत करें। यदि वे सी.डी. उपलब्ध करा सके तो और अच्छा होगा। पूर्णशोधपत्र प्रस्तुत करने पर ही प्रमाणपत्र प्राप्त हो सकेगा।

भवदीय–
कौशलेन्द्र पाण्डेय

सम्मेलनस्थल–
साहित्यविभाग,
संस्कृतविद्याधर्मविज्ञानसंकाय
का.हि.वि.वि.,वाराणसी २२१००५

काशीहिन्दूविश्वविद्यालय:

अन्ताराष्ट्रियं संस्कृतसाहित्यसम्मेलनम्

८–१० फरवरी यावत्, ख्रि.२०१०

आयोजक:-

साहित्यविभाग:

संस्कृतविद्याधर्मविज्ञानसंकाय:

काशीहिन्दूविश्वविद्यालय:

वाराणसी २२१००५

उत्तरप्रदेश:

॥ भारतम् ॥

संयोजक:-

प्रो.कौशलेन्द्रपाण्डेय:

अध्यक्ष:

साहित्यविभाग:

फोन–0542-6701943(का.)0542-2575282(आ.) 09335333821(मो.)

E-male:kaushalendra@bhu.ac.in

सम्मान्य महोदय!/महोदया!

साहित्यविभाग,संस्कृतविद्याधर्मविज्ञानसङ्काय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,वाराणसी द्वारा आगामी ८ फरवरी से १० फरवरी २०१० तक एक त्रिदिवसीय अन्तर्राष्ट्रिय संस्कृतसाहित्यसम्मेलन किया जा रहा है। इस सम्मेलन में देश–विदेश से पारम्परिक तथा आधुनिक विद्वानों को आमन्त्रित किया जा रहा है जिससे संस्कृतसाहित्य की अद्यावधि सम्पूर्ण परम्परा पर पारम्परिक पाण्डित्यपूर्ण पद्धति के साथ–साथ आधुनिक अनुसन्धानपरक दृष्टि से भी विचार विमर्श हो सके। यह महती विडम्बना है कि मानवीय मूल्यों का तथा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के हितों की संरक्षा भावना से ओत–प्रोत संस्कृतसाहित्य आज भी सम्पूर्णतया जनसामान्य में नहीं व्याप्त हो सका है। कतिपय अंश रामायण, महाभारत तथा पञ्चतन्त्र प्रभृति जो कि प्रचारित–प्रसारित हो सके उनकी उपादेयता विश्वविश्रुत है तथा वे विश्वधरोहर बने हुए हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि अन्धी प्रतिस्पर्धा और घनघोर स्वार्थपरायणता के इस काल में विश्वबन्धुता, सहिष्णुता, परदुःखकातरता, संवेदनशीलता और सद्विवेक जैसे श्रेष्ठ तथा उदात्त मानवीय गुणों का विकास हो, उनकी स्थापना हो जो कि साहित्य से ही सम्भव है। विज्ञान और साहित्य का मञ्जुल समन्वय ही मानव और समाज को पूर्ण तथा दीर्घजीवी बनाता है। साहित्य के अभिव्यक्ति की भाषा भले ही भिन्न हो, किन्तु अनुभूति की भाषा तो हृदय की ही होती है। अतः साहित्य की ग्राह्यता सार्वकालिक ही हुआ करती है।

आज का पूरा विश्व न केवल आतंकवाद से जूझ रहा है अपितु उपभोगवादी दृष्टि तथा सतत बढ रही अपसंस्कृति भी इसके आन्तरिक शत्रु हैं जो कि इसे खोखला करते जा रहे हैं। मनुष्य का विवेकहीन बाह्यबल प्रायः उसके विनाश का कारण बनता है जब कि उसका मनोबल उसे आनन्दमय दीर्घजीवन देता है। ये मनोबल और विवेक साहित्य से सहज मिलते हैं। साहित्य ही इनका मुख्य स्रोत है अतः आज आवश्यक है कि कैसे इस स्रोत को अधिकाधिक समाजोपयोगी बनाया जाए। इस दिशा में यह सम्मेलन निश्चित रूप से सहायक होगा।

पिछले कई सौ वर्षों से सम्पूर्ण विश्व में यत्र–तत्र संस्कृत साहित्य का सम्यक्तया अध्ययन हो रहा है जिसमें पाण्डुलिपियों के उद्धार से लेकर शोध और रचनाकर्म आदि सभी समाहित हैं। भारत तथा भारत से बाहर के अनेक विद्वानों ने इसे विश्वसमुदाय के लिए आवश्यक समझते हुए इसमें अपने–अपने ढंग से अपना योगदान किया है। जिससे संस्कृतसाहित्य का प्रचार प्रसार आज वैश्विक आवश्यकता के रूप में समझा जा रहा है। ऐसे में यह सम्मेलन एक ऐसे प्रकाशस्तम्भ के समान होगा जिसका प्रकाश सभी दिशाओं में फैलता है।

साहित्य की भावना, मनुष्य की विशेष नैसर्गिक स्थिति का प्रकटीकरण है जो कि उसके संस्कारों के कारण है। इन संस्कारों का निर्माण साहित्य के अतिरिक्त सङ्गीत तथा कला आदि से भी होता है पर इनमें साहित्य सबसे सहज और सरल है। कविता कहानी के माध्यम से गूढ से भी गूढ बातों को अत्यन्त सरलता से कह दिया जाता है। इस सम्मेलन में इस प्रक्रिया पर और अधिक बल देने का प्रयास होगा। संस्कृतसाहित्य के अध्ययन तथा अनुसन्धान के क्षेत्र में एक पूर्णांग सम्मेलन का अभाव है जो कि अभी भी बना हुआ है , वह कदाचित् इस सम्मेलन से दूर हो सकेगा। यह प्रयत्न किया जाना उचित होगा कि यह सम्मेलन आगे के भी वर्षों में अपनी निरन्तरता बनाए रखे।

इस अन्तर्राष्ट्रिय सम्मेलन का एक प्रमुख लक्ष्य यह भी है कि अध्येताओं और शोधकर्ताओं को संस्कृतसाहित्य के उन तत्त्वों की भी अधिकाधिक जानकारी उपलब्ध करायी जा सके जिसे वे अपनी सीमित साधनों से नहीं जान पाते हैं । इस प्रकार उनके सामने अभीष्ट विषयों (वस्तुओं) के बारे में, जब वे नही जान पाते तब, एक उलझन की स्थिति आ जाती है कि वे जिस उद्देश्य से साहित्य का अध्ययन कर रहे हैं वह पूरा नहीं हो पा रहा है। यह सम्मेलन इन सभी अपेक्षाओं को पूरा करने वाला हो, यह प्रयास हम सभी का होगा।

यद्यपि आप संस्कृतसाहित्य के मर्मज्ञ हैं, तथापि चर्चासौविध्य के लिए कतिपय शीर्षकों का निर्देश इस विश्वास के साथ किया जा रहा है कि इनसे कुछ सहायता मिल सकेगी। विषयनिर्देश के सातत्य में पुनः एक बार यह स्मरणीय है कि निर्दिष्ट विषयों में से जिस किसी भी विषयबिन्दु का आप प्रतिपादन करें वह समकालीन परिप्रेक्ष्य में अपनी प्रासंगिकता को अवश्य परिभाषित करने वाला हो चाहे वह पारम्परिक साहित्य के अनुसन्धान की परिधि में हो अथवा आधुनिकसंस्कृतसाहित्य की व्याख्या करता हो या फिर अन्य किसी भी भाषा से जुडकर बनने वाला निष्कर्ष हो। ऐसा करना आज आवश्यक हो गया है ,क्योंकि साहित्य ही, चाहे वह किसी भी भाषा का हो, एक मात्र ऐसा उपकरण है जो कि मानवता का पूर्ण संरक्षक है। मनुष्य को मनुष्य बनाना साहित्य से ही सम्भव हो पाता है। मनुष्यता को मारकर, मनुष्य को महिमामंडित करने के लिए अनेक संसाधन हैं और उन्होंने ऐसा कर भी दिखाया, किन्तु मनुष्य को उसकी मनुष्यता से ही विभूषित करने का कार्य तो केवल साहित्य ही आदिकाल से करता चला आ रहा है और आगे भी करेगा। अतः आज विश्वसाहित्य को एक मंच पर आने की आवश्यकता है। यह सम्मेलन इस दिशा में एक आरम्भ होगा और आपके विचार इसमें संवाद निबाहेंगे।

विषय–

१–वैदिक वाङ्मय एवं लौकिक संस्कृतसाहित्य

२–शास्त्र एवं संस्कृतसाहित्य (सांख्य,योग,न्याय,वैशेषिक,वेदान्त,मीमांसा,व्याकरण, धर्म शास्त्र,तन्त्र,आगम,जैनदर्शन,बौद्धदर्शन,चार्वाकदर्शन,वास्तुशास्त्र,शिल्पशास्त्र, संगीत तथा अर्थशास्त्र आदि शास्त्र)

३–संस्कृतसाहित्य एवं विभिन्न विद्याएँ

४–पुराणेतिहास एवं साहित्य

५–पारम्परिक संस्कृत साहित्य(नाट्यशास्त्र,अलंकारशास्त्र,काव्य एवं नाट्यादि)

६–संस्कृतसाहित्य एवं कला

७–संस्कृतसाहित्य एवं सौन्दर्यशास्त्र

८–संस्कृतसाहित्य एवं संस्कृतेतर साहित्य में सौन्दर्य कीअवधारणा

९–संस्कृतकाव्य और समाज (सम्बन्ध के विविध पक्ष)

१०–संस्कृतकाव्यों के माध्यम से व्यावहारिक ज्ञान प्रसार

११–संस्कृतकाव्यों के द्वारा सामाजिक / राजनीतिक सन्देश

११–संस्कृतसाहित्य और नारा(स्लोगन)

१२–संस्कृतसाहित्य एवं संस्कृति

१३–संस्कृतसाहित्य और भारतीय इतिहास

१४–संस्कृतसाहित्य और धर्म

१५–संस्कृतसाहित्य का अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य पर प्रभाव

१६–भारतीय भाषाओं का संस्कृतसाहित्य पर प्रभाव

१७–संस्कृत साहित्यशास्त्र का अन्य भाषाओं के काव्यशास्त्र पर प्रभाव

१८–संस्कृतसाहित्य का अन्य भाषाओं के साहित्य(काव्य एवं नाट्य) से अन्तःसम्बन्ध

१९–संस्कृतसाहित्य की समीक्षा परम्परा का अन्य भाषासमीक्षा परम्परा में सातत्य

२०– संस्कृतनाट्यशास्त्रीय परम्परा और क्षेत्रीय नाट्य/संस्कृत

काशीहिन्दूविश्वविद्यालय
साहित्यविभाग
संस्कृतविद्याधर्मविज्ञानसंकाय
अन्ताराष्ट्रियं संस्कृतसाहित्यसम्मेलनम्

८ फरवरीतः–१०फरवरीं यावत्, २०१०खि०

International Conference on Sanskrit Sahitya
8-10 February 2010

पञ्जीकरणप्रपत्र

शुल्कविवरण–

नगद/डी.डी रु०...................दिनांक.................... संख्या......................बैंक...............................

नाम–पं०/प्रो./डॉ./कु./श्रीमती/श्री...

पिता का नाम...

पद/व्यवसाय...

संस्थानाम...

शैक्षिकयोग्यता...

विशेषज्ञता क्षेत्र...

शोधपत्रशीर्षक...

सहलेखक...

पत्रव्यवहार हेतु पता (पिनकोड सहित)...

स्थायी पता...

ई मेल...

दूरभाष (आवासीय, कार्यालयीय)..................................मोबाइल......................................

आगमन की तिथि एवं समय.............................. प्रस्थान की तिथि एवं समय..............................

सहचर..सहचर से सम्बन्ध..

सहचर के लिए शुल्क का विवरण...

शोधपत्रसार –संलग्न/असंलग्न...................................

दिनाङ्क.........................

हस्ताक्षर

पंजीकरणशुल्क अध्यक्ष, साहित्यविभाग, का.हि.वि.वि. के नाम से प्रेषित करें ।

संयोजक–प्रो०कौशलेन्द्र पाण्डेय
अध्यक्ष–साहित्यविभाग,सं.वि.ध.वि.संकाय।
काशीहिन्दूविश्वविद्यालय,वाराणसी २२१००५ ।
E-mail: kaushalendra@bhu.ac.in
दूरभाष–कार्यालय–0542-6701943, मोबाईल– 09335333821 । इस प्रपत्र की फोटोकॉपी मान्य है ।